नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पर्यटन : सुरक्षा का विश्वास कायम रहना चाहिए

जबलपुर के बरगी बांध में क्रूज डूबने की घटना को हुए काफी दिन हो गए हैं लेकिन इस दुर्घटना के बारे में रोज नए-नए खुलासे हो रहे हैं.दरअसल, एक दुर्घटना नहीं, बल्कि मध्य प्रदेश की पर्यटन व्यवस्था पर लगा गंभीर प्रश्नचिह्न है. यह हादसा उस समय हुआ है, जब राज्य सरकार मध्य प्रदेश को देश के सबसे बड़े पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में बहुत कोशिशें कर रही है. लेकिन सच्चाई यह है कि पर्यटन केवल प्राकृतिक सौंदर्य, धार्मिक महत्व और प्रचार अभियानों से विकसित नहीं होता. उसकी सबसे पहली शर्त होती है, पर्यटकों की सुरक्षा और व्यवस्था पर विश्वास. बरगी हादसे ने इसी विश्वास को सबसे गहरी चोट पहुंचाई है.

मध्य प्रदेश प्राकृतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से देश के सबसे समृद्ध राज्यों में गिना जाता है. यहां के नेशनल पार्क, जंगल, वन्यजीव, जलप्रपात, ऐतिहासिक धरोहरें और आध्यात्मिक केंद्र देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं. खजुराहो, सांची, भेड़ाघाट, मांडू, महाकाल मंदिर और ओरछा जैसे पर्यटन स्थल मध्य प्रदेश की पहचान हैं.

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी पर्यटन और आध्यात्मिक पर्यटन को विकास के बड़े आधार के रूप में प्रस्तुत किया है. ओंकारेश्वर से उज्जैन और आगे राजस्थान के खाटूश्यामजी तक प्रस्तावित आध्यात्मिक कॉरिडोर इसी सोच का हिस्सा है. वर्ष 2028 में होने वाले सिंहस्थ की तैयारियों को लेकर भी सरकार बड़े पैमाने पर योजनाएं बना रही है.

लेकिन बरगी हादसे ने यह स्पष्ट कर दिया कि यदि बुनियादी सुरक्षा व्यवस्था कमजोर हो, तो पर्यटन की सारी संभावनाएं खोखली साबित हो सकती हैं. शुरुआती जांच में जिस प्रकार लापरवाही सामने आई है, वह चिंता बढ़ाने वाली है. क्रूज चलाने वाले पायलट को मौसम संबंधी येलो और ऑरेंज अलर्ट जैसी मूलभूत जानकारियों का अभाव था. विषम परिस्थितियों में क्रूज को सुरक्षित किनारे तक लाने की क्षमता भी उसमें नहीं थी. इससे बड़ा प्रश्न यह है कि ऐसी स्थिति में उसे संचालन की अनुमति कैसे दी गई ?

सबसे दुखद पहलू यह रहा कि आपदा प्रबंधन की वास्तविक तस्वीर तब सामने आई, जब डूबते पर्यटकों को बचाने के लिए बांध किनारे काम कर रहे मजदूरों को अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ी. यदि स्थानीय मजदूर साहस नहीं दिखाते, तो हादसा और भी भयावह हो सकता था. यह घटना बताती है कि पर्यटन स्थलों पर आपदा प्रबंधन की व्यवस्थाएं केवल कागजों तक सीमित हैं.

दुनिया भर में पर्यटन उद्योग का सबसे बड़ा आधार 'सुरक्षित अनुभव' होता है. सिक्किम इसका उत्कृष्ट उदाहरण है. दुर्गम पहाड़ों, भारी वर्षा और कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद वहां पर्यटन व्यवस्थित और सुरक्षित माना जाता है. गोवा में बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं, लेकिन वहां सुरक्षा और प्रबंधन पर लगातार ध्यान दिया जाता है. राजस्थान ने भी पर्यटकों की सुविधा और सुरक्षा के लिए कई व्यवहारिक कदम उठाए हैं. जयपुर में रात के बाद शराब दुकानों को नियंत्रित करने जैसे निर्णय भी इसी सोच का हिस्सा हैं.

इसके विपरीत मध्य प्रदेश में पर्यटन स्थलों पर ठगी, अव्यवस्था, अधिक वसूली और सुरक्षा की कमी जैसी शिकायतें लगातार सामने आती रही हैं. नेशनल पार्कों में वन्यजीव संरक्षण तक प्रभावी ढंग से नहीं हो पा रहा. यदि पर्यटन स्थलों पर प्रशासनिक निगरानी, प्रशिक्षित स्टाफ और जवाबदेही का अभाव रहेगा, तो राज्य की छवि प्रभावित होना स्वाभाविक है.

बरगी हादसा सरकार के लिए चेतावनी है. पर्यटन केवल परियोजनाओं से नहीं चलता, बल्कि भरोसे से चलता है. आने वाले सिंहस्थ और धार्मिक पर्यटन परियोजनाओं की सफलता भी इसी पर निर्भर करेगी कि सरकार पर्यटकों को कितना सुरक्षित वातावरण दे पाती है. मध्य प्रदेश के पास अपार संभावनाएं हैं, लेकिन अब आवश्यकता है कि लापरवाही और भ्रष्ट कार्यसंस्कृति पर कठोर कार्रवाई कर पर्यटन व्यवस्था को विश्वसनीय बनाया जाए. तभी राज्य वास्तव में देश के प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में अपनी पहचान मजबूत कर सकेगा.

सोमनाथ : आस्था और संकल्प की अनंत धारा

गजेन्द्र सिंह शेखावत

सोमनाथ के 1000 वर्ष

न हन्यते हन्यमाने शरीरे
-भगवद्गीता 2.20

भगवद्गीता के इस श्लोक में निहित भाव और भारतीय सभ्यता की सनातन चेतना का सबसे जीवंत स्वरूप गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र के दक्षिणी तट पर स्थित सोमनाथ मंदिर में दिखाई देता है. बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम माने जाने वाले सोमनाथ ने इतिहास में अनेक आक्रमणों और विनाश को सहा, लेकिन हर बार फिर खड़ा हुआ और उसकी आरती, घंटियों और श्रद्धा की ध्वनि कभी थमी नहीं.

भारतीय इतिहास के हजारों वर्षों में सनातन धर्म ने कई तरह की चुनौतियों का सामना किया. राजनीतिक परिवर्तन, आक्रमण और सत्ता परिवर्तन के दौर में मंदिरों, मठों और ज्ञान केंद्रों को नुकसान पहुंचाया गया, उनकी संरचनाएं बदली गईं और उन्हें संरक्षण देने वाली व्यवस्थाएं भी प्रभावित हुईं. इसके बावजूद भारतीय आध्यात्मिक परंपरा न केवल जीवित रही, बल्कि समय के साथ स्वयं को पुनर्स्थापित भी करती रही. इसकी सबसे बड़ी शक्ति यही रही कि संस्थागत क्षति और राजनीतिक अस्थिरता के बावजूद इसकी आत्मा कभी समाप्त नहीं हुई.

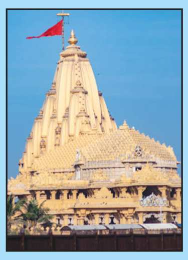

माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, जो सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष भी हैं, सोमनाथ ने एक नए पुनर्जागरण का दौर देखा है. प्रशासनिक सुधार, आधारभूत संरचना का विकास, धरोहर संरक्षण और सांस्कृतिक पहलों ने सोमनाथ को एक जीवंत आध्यात्मिक केंद्र के रूप में और अधिक सशक्त किया है. पर्यावरणीय संतुलन और महिला-सशक्तिकरण आधारित सेवा पहलों के माध्यम से यह दिखाया गया है कि भारतीय सभ्यतागत मूल्य आधुनिक जिम्मेदारियों और समावेशिता के साथ कैसे आगे बढ़ सकते हैं. सोमनाथ स्वाभिमान पर्व आधुनिक समाज को उसकी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का एक प्रयास है। यह हमें याद दिलाता है कि सोमनाथ केवल एक मंदिर नहीं है. इसकी वास्तविक शक्ति उन मूल्यों, परंपराओं और जिम्मेदारियों में है, जिन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया जाता रहा है.

प्राचीन और मध्यकालीन भारत में मंदिर केवल पूजा के स्थल नहीं थे, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के भी केंद्र थे. राजसत्ता से उनके गहरे संबंध के कारण वे युद्ध और संघर्ष के समय सबसे पहले निशाने पर आए. महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ पर किया गया आक्रमण इतिहास की सबसे चर्चित घटनाओं में से एक है। फारसी ग्रंथों में इसे विजय के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि भारतीय परंपरा में इसे पीड़ा, संघर्ष और पुनर्निर्माण की कथा के रूप में याद किया गया. लेकिन ऐतिहासिक सत्य यह है कि सोमनाथ कभी श्रद्धा से विलुप्त नहीं हुआ. चालुक्य शासकों सहित अनेक राजाओं ने इसका पुनर्निर्माण कराया और यह निरंतर आस्था का केंद्र बना रहा. ऐसी अनेक घटनाएं भारत के अन्य हिस्सों में भी देखने को मिलती हैं.

सोमनाथ का इतिहास केवल एक आक्रमण की कहानी नहीं है. प्राचीन काल से ही प्रभास पाटन एक महान तीर्थभूमि रहा है. इसे विभिन्न ग्रंथों और परंपराओं में प्रभास-पट्टन, शिव-पट्टन और प्रभास-तीर्थ जैसे नामों से जाना गया. यहां तीन पवित्र नदियों का संगम होता है और यही वह स्थान माना जाता है जहां भगवान कृष्ण के देहत्याग के बाद उनका अंतिम संस्कार हुआ. निकट ही वैराग्य क्षेत्र और गोपी तालाब स्थित हैं, जहां से गोपी चंदन प्राप्त होता है. इस संपूर्ण क्षेत्र की यात्रा को भारतीय तीर्थ परंपरा में अत्यंत पवित्र माना गया है. काठियावाड़ और गुजरात की प्राचीन धरोहरों पर आधारित कई ऐतिहासिक अभिलेखों और पुरातात्विक रिपोर्टों में भी इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है. सोमनाथ भारत की समावेशी सांस्कृतिक परंपरा का भी प्रतीक है. यह शैव और वैष्णव परंपराओं के अद्भुत संगम का केंद्र है और हमें यह याद दिलाता है कि भारतीय संस्कृति हमेशा से बहुलतावादी और समावेशी रही है. स्वतंत्र भारत में सोमनाथ के पुनर्जागरण का आधुनिक अध्याय 12 नवंबर 1947, दीपावली के दिन आरंभ हुआ, जब देश के प्रथम उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने इस पवित्र स्थल का दौरा किया. विभाजन की पीड़ा के बीच सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया. यह केवल एक मंदिर के पुनर्निर्माण का निर्णय नहीं था, बल्कि राष्ट्रीय चेतना को पुनर्जीवित करने का एक ऐतिहासिक प्रयास था. इसके बाद सोमनाथ को एक सांस्कृतिक और बौद्धिक केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य प्रारंभ हुआ. 11 मई 1951 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद की उपस्थिति में प्रात:काल संपन्न हुई प्राण-प्रतिष्ठा ने पूरे राष्ट्र की सांस्कृतिक स्मृति और आत्मविश्वास को नई शक्ति प्रदान की.

आज जब भारत 'भारतञ्च2047' की ओर बढ़ रहा है, तब सोमनाथ से जुड़े ये सभ्यतागत मूल्य और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं. तकनीकी बदलाव और वैश्विक अनिश्चितताओं के इस दौर में भारत दुनिया को यह संदेश देता है कि विकास का अर्थ करुणा को त्यागना नहीं है और शक्ति का अर्थ संयम को छोड़ देना नहीं है. सोमनाथ हमें सिखाता है कि सच्चा नेतृत्व केवल सामर्थ्य से नहीं, बल्कि स्मृति, विवेक और मानवीय मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता से निर्मित होता है.

(लेखक भारत सरकार में केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री हैं)

विंध्य की डायरी

एक ही झटके में राजनीति के रंगरेजों का बदला रंग

डॉ. रवि तिवारी

प्रशासनिक और राजनैतिक संरक्षण की चासनी में डूब कर विंध्य में पनपी व्यवस्था की मनमौजी धारा पर ब्यूरोक्रेसी की लगाम लगते ही जो मंजर देखने को मिला इसकी कल्पना शायद ही किसी ने कभी की हो. अपनी सहज कार्यशैली के साथ तल्ख रुख दिखाकर रातोरात नायक बनने की कहानी इस बार फिल्मी नही हकीकत से भरी हुई है. प्रदेश के मुखिया डॉ मोहन यादव ने विंध्य के नेताओ की शिकवा-शिकायतों की तासीर पर कुछ ऐसा पूर्ण विराम लगाया कि वर्षों से मनचाही जगहों में जमे अफसर,कर्मचारी सौपे गए दायित्व से मुक्त होने का ऐलान खुले आम करने लगे.चर्चा तो यह है कि रीवा और सीधी के सत्तारुढ़ दल के नेताओ ने जिले के आला अधिकारियों के कार्यव्यवहार पर खुल कर अपनी राय सत्ता के शीर्ष तक पहुचाई. इसके बाद शुरू हुए मंथन से जो रत्न निकले उन्हें जनता का आभूषण बनाकर भेज दिया गया. जनता के गले मे पड़ते ही इन आभूषणों ने व्यवस्था की ऐसी चमक पैदा की दूसरे जौहरियों की आँखे चौधिया गई. हमेशा सिस्टम को जेब मे रखकर अपने अनुकूल व्यवस्था कायम करने के अनुभवी लोगो के पैरों तले जमीन खिसक गई.कभी किसी ने सोचा भी नही था कि स्कूल के हेडमास्टर की तरह हाथ मे रजिस्टर लेकर ठीक दस बजे कोई उनकी भी हाजरी लेने लगेगा.फिर तो वो सब होना ही था जो हुआ पर पहली बार जनता के बीच से समर्थन के जो स्वर उठे उसने सत्ता के बन्द गलियारे में बैठे चौकीदारों की न सिर्फ कुंडली खटखटा दी बल्कि इस ओर भी इशारा कर दिया है कि दिन में देखे सपने कभी भी टूट सकते हैं.

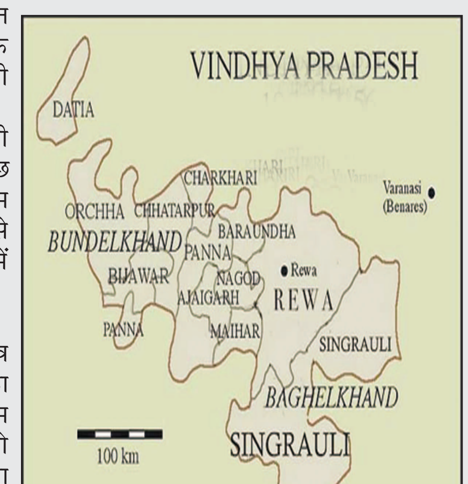

कार्यालय विहीन प्राधिकरण से विकास की उम्मीद

विकास की दृष्टि से पिछड़े विंध्य में विकास के नए आयाम तय करने के लिए एक बार फिर प्राधिकरण में राजनैतिक नियुक्ति का ऐलान कर दिया गया है. एक अध्यक्ष और दो उपाध्यक्ष के मार्गदर्शन में चलने वाले इस प्राधिकरण में पदस्थ बाबू भी शायद ही होगा. वर्षो तक गुमनामी में रहे इस प्राधिकरण में पहले जो पदस्थापना रही.बदली बयार में उन्होंने अपना ठिकाना ही बदल लिया.बगैर काम बिना अधिकारी कोई फिर होने वाली सुबह का इंतजार कब तक करता.अब देखना यह है कि विकास की उम्मीद की इस पोटली से कौन-कौन से नए खेल निकलते हैं.

न्यास बनाम प्राधिकरण

चित्रकूट में वनवासी भगवान राम के नाम पर वर्षो से जन भावनाओ को दिलासा देने के क्रम में इस बार एक साथ विकास के इतने मोर्चे खोल दिए गए हैं कि अब स्थानीय जनता भी भ्रमित होने लगी है कि कौन सा काम किस योजना के तहत हो रहा है. नगर पंचायत के बाद श्री राम वन गमन पथ न्यास साथ ही केंद्र की स्वदेश दर्शन बहुउद्देश्यीय विकास योजना और अब चित्रकूट विकास प्राधिकरण का गठन कर नगर पंचायत के 14 वार्ड में सिमटे चित्रकूट के धार्मिक महत्व के स्थलों को विश्व स्तरीय पर्यटन स्थल के रूप में विकास करने का प्रस्ताव है.इतना ही नही सौ करोड़ से ऊपर के काम चल भी रहे हैं. जिसकी एजेन्सियों पर आए दिन स्थानीय लोग प्रश्न खड़ा करते रहते हैं.

सरकारी कर्मियों के लिए नई पेंशन योजना

पिछले माह राज्य सरकारी कर्मचारियों ने अपनी हड़ताल के समय जो प्रमुख मांग की थी, वह दिए हुए आश्वासन के अनुसार स्वीकार कर ली गई. महाराष्ट्र सरकार ने जीआर जारी कर राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली में सुधार कर नई संशोधित पेंशन योजना शुरू की है जो 2025 के बाद राज्य सरकारी सेवा में आए कर्मचारियों व अधिकारियों पर लागू होगी. 20 वर्ष की सेवा के बाद अंतिम वेतन के बेसिक पे की 50 प्रतिशत रकम और साथ में महंगाई भत्ता मिलाकर निवृत्ति वेतन दिया जाएगा. 10 से 20 वर्ष सेवा कर चुके कर्मचारियों को उनके सेवाकाल के अनुसार न्यूनतम 7,500 रुपए पेंशन मिलेगी. बैंकों की घटी हुई ब्याज दर तथा आर्थिक अनिश्चितता देखते हुए निवृत्ति वेतन का महत्व है. 2004 तक लागू पेंशन योजना में भी इसी प्रकार के प्रावधान थे लेकिन वह योजना बंद कर दी गई. इसके बाद पुरानी पेंशन योजना फिर से लागू करने के लिए आंदोलन होते रहे. पिछले लोकसभा चुनाव के समय महाराष्ट्र में पुरानी योजना लागू करने का आश्वासन दिया गया था लेकिन कुछ हुआ नहीं. अब सरकार ने इसे राजपत्र में जारी किया. जो कर्मचारी ऐच्छिक निवृत्ति चाहेंगे, उन्हें निवृत्ति के समय पेंशन फंड नियामक व विकास प्राधिकरण के पास जमा 60 प्रतिशत निधि सरकार को वापस करनी होगी. संबंधित कर्मचारी के निधन के बाद इस रकम के आधार पर उसके परिवार को पेंशन मिलेगी. अभी कर्मचारियों के वेतन, पेंशन तथा कर्ज पर ब्याज मिलाकर राज्य के कुल राजस्व की 55 प्रतिशत रकम खर्च हो रही है. इस नई योजना से उस पर और भार पड़ेगा. इसे देखते हुए राज्य सरकार को अपने आय के साधन बढ़ाने होंगे. क्योंकि आगे 8 वां पे कमीशन भी लागू होने वाला है. मंत्रालय से लेकर जिला परिषद व सरकारी स्कूलों से लेकर विद्युत मंडल तक जिसे नौकरी मिल गई वह 58 वर्ष की आयु तक सेवा कर पेंशन का हकदार बन जाता है. निजी क्षेत्र में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है. इसीलिए लोग सरकारी नौकरी पाने के इच्छुक रहते हैं. राज्य में प्रति वर्ष 3 प्रतिशत सरकारी कर्मचारी सेवानिवृत्त होते हैं. सरकार को असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के बारे में भी सोचना चाहिए.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मेट गाला फैशन शो का नाम, ईशा अंबानी साथ ले गईं आम

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मेट गाला जैसे हाई सोसाइटी के बड़े फैशन शो में ईशा अंबानी ने कमाल कर दिया. उन्होंने अपनी कमर में एक आम लटका कर लोगों को विस्मय में डाल दिया.' हमने कहा, 'मराठी में आम को आंबा कहते हैं. प्रसिद्ध मराठी गीत है- नाच रे मोरा आंब्याचा वनात, नाच रे मोरा नाच ! ईशा अंबानी ने आंबा साथ लेकर फलों के राजा आम के प्रति अपनी पसंद जाहिर कर दी. अब आप बताइए कि वह कौन सा आम कमर में लटकाकर ले गईं? वह रत्नागिरी का हापुस था या आंध्रप्रदेश का नीलम, तोतापरी या बैगनपल्ली? यूपी का लंगड़ा, दशहरी चौसा, सफेदा मलीहाबादी या केसर? बंगाल का हिमसागर वनराज, सुवर्ण रेखा, इमामपसंद? अमेरिका में आम या तो मेक्सिको से आते हैं या हवाई द्वीप से? भारत से भी वहां आम भेजे जाते हैं जिनकी एक पेटी वहां 50 से 60 डॉलर की पड़ती है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ईशा अंबानी की पतली कमर में जो आम लटका था, वह ब्रांज या कांसे से निर्मित था जिसे सुबोध गुप्ता नामक कलाकार ने हाथ से पेंट किया था. धातु का बना वह आम बिल्कुल असली आम जैसा नजर आता था. यह आम मेट गाला शो की थीम 'फैशन इज आर्ट' से पूरी तरह मेल खाता था. हमारा ख्याल है कि आम के मौसम में फैशन शो में आम का प्रदर्शन सामयिक रहा.'

हमने कहा, 'आम को लेकर अनेक कहावतें हैं जैसे आम के आम गुठलियों के दाम ! आम खाने से मतलब रखो, पेड़ गिनने से क्या फायदा!' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आज की राजनीति में एक कहता है आम तो दूसरा कहता है इमली! आम जनता का काम वोट देना है लेकिन चुनकर आए नेताओं में आम तौर पर आम सहमति या आम राय बन नहीं पाती.'

हमने कहा, 'मौसम आम का होने पर भी आम आदमी पार्टी बेहाल हो गई है. राघव चड्ढा सहित 7 राज्यसभा सदस्य 'आप' छोड़कर भाजपा में जाकर नमो नमो का भजन करने लगे. सिर्फ नाम के लिए आम आदमी पार्टी की सत्ता पंजाब में रह गई है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12253

-डॉ. सागर खादीवाला

1		2	■	■	3		4
	■	5	6	7		■	
	■	■	8		■	■	
■	9	10	■	■	11	12	■
■	13		■	■	14		■
15	■	■	16	17	■	■	18
	■	19			20	■	
21			■	■	22		

बाएं से दाएं
1.चालीस पदों का समूह, चालीस दिन का समूह 3. स्वास्थ्य 5. डराना, डांटना 8. ठोकने का शब्द 9. निकट, समीप 11. कुछ, थोड़े से 13. तख्तों की बनी बड़ी चौकी, सिंहासन 14. वह कपड़ा जो मस्तूल के सहारे ताना जाता है और जिसमें हवा भरने के कारण नाव चलती है, तंबू, रखवाला 16. कसावट, बल, अर्क 19. गाड़ियां खड़ी करने का स्थान 21. चांदी 22. कोमल, तनिक से आघात से टूट-फूट जाने वाला

ऊपर से नीचे
1. नौकरी, सेवा 2. इच्छा, अभिलाषा 3.फौज, मादा पक्षी का गर्मी पहुंचाने के लिए अंडों पर बैठना 4. एक तरह का चलना गाना, गीत, गान 6. वह मकान जिसमें किसी महंत के अधीन साधु रह सकें, देवालय 7. कौआ 9. पत्ता गिरने या गिराने का भाव या क्रिया 10. कठोर, कड़ा 11. एक वृक्ष जिसमें हल्के पीले रंग के फूल आते हैं 12. समूह, झुंड, सेना, पार्टी 15. देशद्रोही 16. जंजीर का छल्ला, गीत का एक पद 17. साथी, सहयोगी, मित्र 18. वह जो शारीरिक श्रम करके निर्वाह करता हो 19. शरीर, देह 20. अनेक प्रकार का, माता का पिता

Solution 12252

अ	प	रू	प	■	आ	मु	ख
द	व	■	सी	मा	शु	ल्क	■
द	न	द	ना	ना	■	■	आ
■	■	र	■	■	इ	का	ई
प्रा	थ	मि	क	■	क	स	ना
ण	■	या	च	क	ता	■	■
दा	■	न	■	स	रा	प	ना
न	दी	■	भी	म	■	री	म

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यर्थ के वाद विवाद से मन खिन्न रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, यात्रा में कष्ट होगा, स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा,वर्षके मध्य में विदेशी व्यापारियों के लिये समय लाभप्रद रहेगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में मित्रों के सहयोग से योजनाओं का समाधान होगा, राजनैतिक रूपरेखा बनेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की मित्रों के सहयोग से नवीन योजनाओं की रूपरेखा बनेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों की यात्रा में कष्ट होगा, मकर और कुंभ राशिके व्यक्तियों को यश मिलेगा,मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को मेहनत अधिक करना होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को संयम सेकाम लेना हितकर रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को साहस पराक्रम बढ़ेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक चंचल तथा मिलनसार होगा, नेतृत्व करने की क्षमता होगी, किसी तरह की उच्च शिक्षा का ज्ञाता होगा, नौकरी अच्छी रहेगी, आय के एक से अधिक साधन उपलब्ध होंगे, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- ले देकर काम कराने की योजना सफल होगी, बैचारिक गतिरोध दूर होंगे, नवीन वस्त्राभूषण आदि की प्राप्ति होगी, साहसिक कार्यो में सफलता प्राप्त होगी.

वृषभ- कारोबारी यात्रा सफल होगी, श्रम एवं प्रयास करने पर अच्छी सफलता मिलेगी, लाभ प्राप्त होगा, अनावश्यक कार्यो में न उलझें.

मिथुन- आकस्मिक लाभ के अवसर मिलेंगे, जधनु जायजाद एवं सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, लेखन अध्ययन के कार्यो में रूचि रहेगी, धार्मिक प्रवास का योग है.

कर्क- वाणी दोष से विवाद पैदा हो सकता है, अत्याधिक भरोसा न करें, लेखन एवं अध्ययन के कार्यो में दिन अनुकूल रहेगा, सफलता प्राप्त होगी.

सिंह- युवाओं को अच्छी सफलता मिलेगी, कोर्ट कचहरी आदि के कार्यो में सफलता मिलेगी, व्यापार व्यवसाय में प्रगति होगी, लाभ में संतोष रहेगा.

कन्या- नई जिम्मेदारी आने से परेशानी हो सकती है, गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें, अधिकारियों की अनुकूलता रहेगी, व्यर्थ के विवाद से बचें.

तुला- रोक टोक के चलते कार्यस्थल पर विवाद संभव है, माता पिता का सहयोग कामकाज में सहायक रहेगा, स्वास्थ्य के प्रति सावधानी रखें.

वृश्चिक- व्यापारिक साझेदारी लाभदायी रहेगी, शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी, मनोवाछित सफलता मिलेगी, आगन्तुकों के आने से हर्ष होगा.

धनु- किसी सिफारिस से अटके काम आसानी से पूरे होंगे, राजनैतिक क्षेत्र में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी, उच्चाधिकारियों का सहयोग रहेगा.

मकर- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, नये लोगों के साथ संपर्क मेलजोल बढ़ेगा, आकस्मिक रूके कार्य बनेंगे, मान सम्मान प्राप्त होगा.

कुम्भ- सोचा कार्य किसी की मदद से पूरा होगा, आकस्मिक खर्च में वृद्धि होगी, अतिथि आगमन होगा, मनोरंजन आदि में खर्च होगा.

मीन- कानूनी मामलों में व्यस्तता रहेगी, नियोजित कार्य में सफलता मिलेगी, मन में हर्ष रहेगा, लाभ होगा. नवीन उपहार आदि की प्राप्ति होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

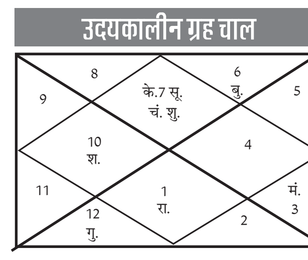

पंचांग

रा.मि. 21 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण नवमीं चन्द्रवासरे दिन 10/12, शतभिषा नक्षत्रे रात 8/56, ऐन्द्र योगे रात 9/0, गर करणे सू.उ. 5/25, सू.अ. 6/35, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक-4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण नवमीं को शतभिषा नक्षत्र के प्रभाव से गेहूँ, जौ, चना, बाजरा आदि में मंदी का रूख रहेगा, गुड़ खांड, शक्कर, कालीमिर्च, धनियां, अलसी, अरंडी, में नरमी रहेगी. भाग्यांक 9064 है.

SUDOKU 7385

6	9			7	4		8	
	8	5	6	2			4	9
7						6		3
	3	9	5				1	
1				8				5
	6				2	9	3	
4		7						2
8	2			5	9	1	7	
	1		2	3			5	8

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7384

6	5	3	9	1	7	2	8	4
9	1	8	2	6	4	3	7	5
7	4	2	5	3	8	1	9	6
3	7	1	6	9	2	4	5	8
8	6	9	1	4	5	7	2	3
5	2	4	8	7	3	9	6	1
2	9	5	4	8	1	6	3	7
4	3	6	7	5	9	8	1	2
1	8	7	3	2	6	5	4	9